Class - B.Sc Agricultural      Semester - VI

Subject - Post Harvest Engineering.

College - R.S.M. (P.G) College Dhampur (Bijnor)

Lecture - Ist



## भारतीय कृषि प्रसंस्करण का इतिहास (History of Indian Agricultural Processing):-

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक कृषि प्रसंस्करण उद्योगों में केवल हस्तचालित धान कुटाई (Hand Pounding Units) गेहूं पीसने की पनचक्कियों (Windmills), बैल चालित गन्ना पेरने (Sugarcane crusher) उपयोग में लाये जाते थे। लेकिन ब्रिटिश काल में मद्रास के गवर्नर विलियम डेनिसन के द्वारा अधिक जोर देने की सिफारिश की गई इस कार्य के लिये इंग्लैंड से प्रदर्शन तथा तकनीकों को अपनाने के लिये तत्कालीन उन्नत कृषि तथा प्रसंस्करण यंत्र जैसे - मड़ाई यंत्र (Thresher), ओसाई यंत्र (Winnower), कुट्टी काटने की मशीन (Chaff cutter), शक्ति चालित हल, कल्टीवेटर, सीडड्रिल तथा पशु चालित हो भारत लाये गये

बंगाल में 1870 के अकाल के दौरान खाद्य आपूर्ति के लिये कृषि प्रसंस्करण तथा भंडारण की आवश्यकता महसूस की गई और 1880 में गठित अकाल आयोग (Famine Commission) ने कृषि में सुधार तथा उन्नत कृषि प्रसंस्करण पर जोर दिया गया ताकि खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखते हुए उन जरूरतमंदों तक पहुंचाया जा सके।

रॉयल कमीशन (1928) के द्वारा विस्तृत अध्ययन के बाद कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, ग्रामीण उद्योगों, प्रसंस्करण उद्योगों तथा सहकारिता अपनाने पर बल दिया गया। जिसके तहत ब्रिटिश काल में अनुसंधान तथा विकास के लिए संस्थान स्थापित किये गये। जिसमें प्रमुख संस्थान - इम्पीरियल कृषि अनुसंधान संस्थान (Imperial Agricultural Research Institute) पूसा, बिहार में खोला गया

हरित क्रान्ति (1980) से उत्पन्न अधिक खाद्य उत्पाद को प्रसंस्करण एवं अधिक भंडारण की आवश्यकता महसूस की गई जिसके लिये बहुत से उद्योग स्थापित किये गये जैसे - धान प्रसंस्करण (Rice milling), गेहूं प्रसंस्करण (wheat milling), Pulp and Paper Industries, Dairy Industries, Jute Industries, Sugar mills and Solvent extraction) मुख्य रूप से थी।

आज के परिदृश्य में प्रसंस्करण उद्योगों का कुल बजट का आकलन लगभग 820000 करोड़ रुपये है। जिसमें लगातार वृद्धि हो रही है।

Scanned with CamScanner